अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

6-12 वर्ष की आयु के बच्चों के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन: *बिहार राज्य के सारण जिले के विशेष संदर्भ में*

पूजा कुमारी

शोधार्थी गृह विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा

डॉ0 किरण कुमारी

प्राचार्य, जय प्रकाश महिला विश्वविद्यालय छपरा

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य 6 से 12 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का विश्लेषण बिहार राज्य के सारण जिले के विशेष संदर्भ में करना है। बाल्यावस्था का यह मध्यवर्ती चरण बालक के व्यक्तित्व-निर्माण, सामाजिक अनुकूलन, संज्ञानात्मक विकास तथा संवेगात्मक स्थिरता की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। पारिवारिक वातावरण, आर्थिक स्थिति, विद्यालयी व्यवस्था, पोषण-स्तर, सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, जनसंचार माध्यम तथा सरकारी नीतियाँ जैसे अनेक कारक संयुक्त रूप से बालक के विकास को प्रभावित करते हैं। सारण जिला, जो गंगा के मैदानी भाग में स्थित एक मुख्यतः ग्रामीण एवं कृषि-प्रधान जिला है, अपनी सामाजिक-आर्थिक संरचना, सीमित संसाधनों तथा लिंग-आधारित असमानताओं के कारण बाल विकास के क्षेत्र में विशिष्ट चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों (जनगणना 2011, यू-डाइस तथा राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5) एवं उपलब्ध साहित्य के विश्लेषणात्मक अवलोकन पर आधारित है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निम्न साक्षरता दर, लैंगिक असमानता, कुपोषण, विद्यालयी संसाधनों की कमी तथा पारिवारिक अस्थिरता जैसे कारक सारण जिले में बच्चों के समग्र विकास में बाधक सिद्ध हो रहे हैं। अंत में शोध पत्र में इन चुनौतियों के समाधान हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

मुख्य शब्द (Keywords): *सामाजिक विकास, मनोवैज्ञानिक विकास, बाल्यावस्था, सारण जिला, बिहार, पारिवारिक वातावरण, पोषण, लिंग भेद, ग्रामीण समाज।*

1. प्रस्तावना

बाल्यावस्था मानव जीवन की नींव है, जिस पर व्यक्ति के भावी व्यक्तित्व, सामाजिक व्यवहार तथा मानसिक स्वास्थ्य की इमारत खड़ी होती है। विकासात्मक मनोविज्ञान की दृष्टि से 6 से 12 वर्ष की आयु को 'मध्य बाल्यावस्था' (Middle Childhood) कहा जाता है। इस अवस्था में बालक परिवार की संकुचित परिधि से निकलकर विद्यालय, मित्र-मंडली तथा व्यापक समाज के संपर्क में आता है। इसी अवधि में उसकी सामाजिक पहचान, नैतिक समझ, आत्म-सम्मान, सहयोग की भावना, प्रतिस्पर्धा के प्रति दृष्टिकोण तथा संवेगात्मक नियंत्रण की क्षमता आकार लेने लगती है। जीन पियाजे के अनुसार यह अवस्था 'मूर्त संक्रियात्मक चरण' (Concrete Operational Stage) कहलाती है, जिसमें बालक की तार्किक चिंतन-क्षमता विकसित होती है, जबकि एरिक एरिक्सन के मनो-सामाजिक विकास सिद्धांत में इसे 'उद्यमशीलता बनाम हीनता' (Industry vs. Inferiority) के संकट से जोड़ा गया है।

भारत जैसे विविधता-पूर्ण एवं विकासशील देश में बालकों का सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास अनेक सूक्ष्म एवं स्थूल कारकों से प्रभावित होता है। परिवार की आर्थिक स्थिति, माता-पिता की शिक्षा, पालन-पोषण की

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

शैली, पोषण एवं स्वास्थ्य-सुविधाओं की उपलब्धता, विद्यालयी वातावरण, समुदाय की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना, जातिगत एवं लैंगिक भेदभाव तथा जनसंचार माध्यमों का प्रभाव — ये सभी तत्व मिलकर बालक के व्यक्तित्व को गढ़ते हैं। ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में, जहाँ संसाधनों की कमी, निर्धनता तथा सामाजिक रूढ़िवादिता अधिक प्रबल होती है, वहाँ बाल विकास की प्रक्रिया अतिरिक्त जटिलताओं से गुजरती है।

बिहार राज्य, जो जनसंख्या की दृष्टि से देश का तीसरा सबसे बड़ा राज्य है, सामाजिक-आर्थिक विकास के अनेक सूचकांकों में राष्ट्रीय औसत से पीछे माना जाता रहा है। इसी राज्य के सारण जिले (पूर्ववर्ती छपरा जिला) की स्थिति भी इससे भिन्न नहीं है। सारण एक मुख्यतः कृषि-आधारित, उच्च जनसंख्या-घनत्व तथा उल्लेखनीय प्रवासी-प्रवृत्ति (Out-migration) वाला जिला है, जहाँ बड़ी संख्या में पुरुष रोजगार हेतु अन्य राज्यों में प्रवास करते हैं। इसके परिणामस्वरूप अनेक परिवारों में बच्चों का पालन-पोषण मुख्यतः माताओं अथवा वृद्ध परिजनों द्वारा होता है, जो पारिवारिक संरचना एवं बाल-पालन की प्रक्रिया पर सीधा प्रभाव डालता है। ऐसी परिस्थिति में यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि सारण जिले के विशेष सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य में बच्चों के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का व्यवस्थित अध्ययन किया जाए, ताकि नीति-निर्माताओं, शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए उपयोगी निष्कर्ष प्रस्तुत किए जा सकें।

2. शोध समस्या का कथन

यद्यपि बाल विकास पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है, तथापि बिहार के ग्रामीण जिलों, विशेषतः सारण जैसे प्रवासन-प्रधान जिले के संदर्भ में, बच्चों के सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विकास को समग्र रूप से समझने वाले क्षेत्र-विशिष्ट अध्ययनों का अभाव पाया जाता है। अधिकांश अध्ययन या तो स्वास्थ्य एवं पोषण तक सीमित हैं अथवा शिक्षा के परिमाणात्मक पक्षों (जैसे नामांकन दर, साक्षरता दर) तक केंद्रित हैं। बालक के भावनात्मक सुरक्षा-बोध, सामाजिक कौशल, आत्म-अवधारणा तथा पारस्परिक संबंधों पर पड़ने वाले प्रभावों का समेकित विश्लेषण अपेक्षाकृत कम देखने को मिलता है। यही शोध-अंतराल (Research Gap) प्रस्तुत अध्ययन का आधार बनता है।

3. अध्ययन का महत्व एवं उपयोगिता

प्रस्तुत अध्ययन का महत्त्व अनेक दृष्टियों से रेखांकित किया जा सकता है। प्रथमतः, यह अध्ययन बिहार के एक ऐसे जिले पर केंद्रित है, जहाँ उच्च जनसंख्या-घनत्व, प्रवासन की प्रबल प्रवृत्ति तथा सीमित सामाजिक-आर्थिक संसाधनों के कारण बाल विकास की प्रक्रिया विशिष्ट चुनौतियों से गुजरती है, किंतु जिस पर क्षेत्र-विशिष्ट अकादमिक साहित्य अपेक्षाकृत सीमित उपलब्ध है। द्वितीयतः, यह अध्ययन सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक — दोनों आयामों को समेकित रूप से सम्मिलित करता है, जबकि अधिकांश पूर्ववर्ती अध्ययन इन्हें पृथक-पृथक रूप से देखते रहे हैं। तृतीयतः, इस शोध पत्र के निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा नीति-निर्माताओं के लिए व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, विशेषकर आंगनवाड़ी, विद्यालय एवं पंचायत स्तर पर संचालित बाल-कल्याण कार्यक्रमों के अभिकल्पन में। अंततः, यह अध्ययन भविष्य के शोधार्थियों के लिए सारण जिले अथवा समान सामाजिक-आर्थिक संरचना वाले अन्य जिलों में प्राथमिक क्षेत्र-सर्वेक्षण आधारित गहन अध्ययन हेतु एक सैद्धांतिक एवं सांख्यिकीय आधार-भूमि प्रदान करता है।

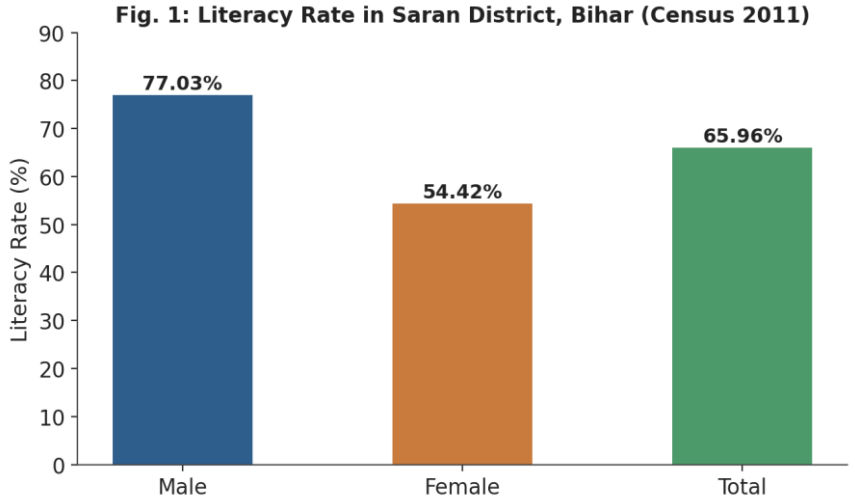
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

4. अध्ययन क्षेत्र : सारण जिले का प्रोफाइल

सारण जिला बिहार राज्य के उत्तर-मध्य भाग में गंगा एवं घाघरा (सरयू) नदियों के संगम-क्षेत्र में स्थित है, जिसका मुख्यालय छपरा नगर है। प्रशासनिक दृष्टि से यह जिला सारण प्रमंडल के अंतर्गत आता है तथा इसकी सीमाएँ उत्तर में सिवान एवं गोपालगंज, पूर्व में पटना एवं वैशाली (गंगा नदी द्वारा विभाजित) तथा दक्षिण-पश्चिम में उत्तर प्रदेश के बलिया जिले से लगती हैं। जनगणना 2011 के अनुसार सारण जिले की कुल जनसंख्या लगभग 39,51,862 है, जिसमें पुरुषों की संख्या 20,22,821 तथा महिलाओं की संख्या 19,29,041 है। जिले का लिंगानुपात 926 (प्रति हजार पुरुष) दर्ज किया गया है, जो राष्ट्रीय औसत से निम्न है और यह लैंगिक असंतुलन की ओर संकेत करता है।

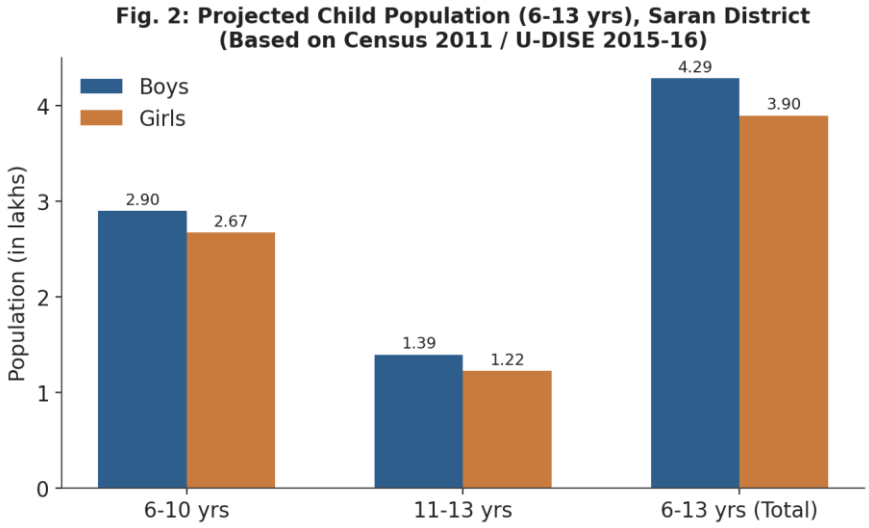
शिक्षा की दृष्टि से जिले की साक्षरता दर (7 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में) 65.96 प्रतिशत है, जिसमें पुरुष साक्षरता दर 77.03 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर मात्र 54.42 प्रतिशत है। लगभग 23 प्रतिशत अंकों का यह लैंगिक अंतराल दर्शाता है कि जिले में बालिका-शिक्षा की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर रही है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव बालिकाओं के सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विकास तथा आत्म-निर्भरता की भावना पर पड़ना स्वाभाविक है। यू-डाइस (U-DISE) 2015-16 के आँकड़ों के अनुसार 6-13 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों की अनुमानित जनसंख्या लगभग 8.19 लाख है, जिसमें बालकों की संख्या (लगभग 4.29 लाख) बालिकाओं की संख्या (लगभग 3.90 लाख) से अधिक है — यह प्रवृत्ति भी बाल-लिंगानुपात में असंतुलन की पुष्टि करती है।

सामाजिक संरचना की दृष्टि से जिले में अनुसूचित जाति की जनसंख्या लगभग 4,74,066 तथा अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 36,786 है। जिले की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है, किंतु भूमि-जोत का आकार छोटा होने, बाढ़ की सम्भावना तथा सीमित औद्योगीकरण के कारण बड़ी संख्या में कामकाजी-आयु के पुरुष रोजगार की तलाश में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र तथा गुजरात जैसे राज्यों की ओर प्रवास करते हैं। इस उच्च प्रवासन-दर का प्रत्यक्ष प्रभाव परिवार की संरचना पर पड़ता है — अनेक घरों में बच्चों का पालन-पोषण एकल-अभिभावक (प्रायः माता) अथवा दादा-दादी द्वारा किया जाता है, जो बालकों में अनुशासन, मार्गदर्शन एवं भावनात्मक समर्थन की दृष्टि से विशिष्ट चुनौतियाँ उत्पन्न करता है।



चित्र 1: सारण जिले में साक्षरता दर — लिंग के आधार पर (स्रोत: जनगणना भारत, 2011)

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)



चित्र 2: सारण जिले में 6-13 वर्ष आयु वर्ग की प्रक्षेपित बाल जनसंख्या (स्रोत: यू-डाइस, बिहार, 2015-16)

5. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं —

1. 6-12 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख पारिवारिक, आर्थिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों की पहचान करना।

2. उक्त आयु वर्ग के बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास (संवेगात्मक, व्यावहारिक एवं संज्ञानात्मक पक्ष) को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करना।

3. सारण जिले की सामाजिक-आर्थिक एवं जनसांख्यिकीय संरचना के विशेष संदर्भ में उक्त कारकों की प्रकृति एवं सीमा का परीक्षण करना।

4. बाल विकास में बाधक प्रमुख चुनौतियों की पहचान करते हुए नीतिगत एवं व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

6. कार्यगत अवधारणाएँ (Operational Concepts)

अध्ययन में प्रयुक्त प्रमुख पदों की स्पष्टता हेतु उन्हें निम्नानुसार कार्यगत रूप से परिभाषित किया गया है —

- सामाजिक विकास : वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से बालक सामाजिक नियमों, मूल्यों, पारस्परिक संबंधों तथा सामूहिक व्यवहार के मानदंडों को सीखकर समाज के उत्तरदायी सदस्य के रूप में ढलता है — जैसे सहयोग, साझेदारी, नियम-पालन एवं संप्रेषण-कौशल।
- मनोवैज्ञानिक विकास : बालक की संवेगात्मक स्थिरता, आत्म-अवधारणा, आत्म-सम्मान, संज्ञानात्मक क्षमता तथा समग्र मानसिक स्वास्थ्य में होने वाली क्रमिक वृद्धि एवं परिपक्वता की प्रक्रिया।
- मध्य बाल्यावस्था (6-12 वर्ष) : विकासात्मक मनोविज्ञान में वह अवस्था, जो प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के मध्य स्थित है तथा जिसमें बालक का सम्पर्क परिवार से आगे बढ़कर विद्यालय एवं व्यापक समाज तक विस्तृत होता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

- सारण जिला (विशेष संदर्भ) : अध्ययन में 'सारण जिला' पद बिहार राज्य के उक्त प्रशासनिक जिले को संदर्भित करता है, जिसे द्वितीयक आँकड़ों (जनगणना, U-DISE, NFHS-5) के माध्यम से विश्लेषित किया गया है।

चूँकि प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों एवं साहित्य-समीक्षा पर आधारित वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक शोध है, अतः इसमें सांख्यिकीय रूप से परीक्षण योग्य परिकल्पनाओं के स्थान पर उपर्युक्त कार्यगत अवधारणाओं तथा निर्धारित शोध-उद्देश्यों को विश्लेषण का आधार बनाया गया है। यह दृष्टिकोण उन वर्णनात्मक सामाजिक अध्ययनों में सामान्यतः अपनाया जाता है, जिनका उद्देश्य किसी परिघटना के कारण-प्रभाव संबंधों को सांख्यिकीय रूप से सिद्ध करना नहीं, अपितु किसी निश्चित भौगोलिक एवं सामाजिक संदर्भ में व्याप्त प्रवृत्तियों, पैटर्न एवं अंतर्संबंधों की गहन एवं समग्र समझ विकसित करना होता है। तदनुसार, अध्ययन के प्रत्येक अनुभाग में उद्देश्यों के अनुरूप प्रासंगिक साक्ष्यों एवं सैद्धांतिक ढाँचों का उपयोग करते हुए विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

7. साहित्य समीक्षा

बाल विकास से संबंधित सैद्धांतिक आधार मुख्यतः पाश्चात्य विकासात्मक मनोविज्ञान से प्राप्त होता है। जीन पियाजे ने अपने संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत में मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7-11 वर्ष) को तार्किक चिंतन, वर्गीकरण तथा संरक्षण (Conservation) की अवधारणाओं के विकास से जोड़ा। लेव वाइगोत्स्की के समाजसांस्कृतिक सिद्धांत के अनुसार बालक का संज्ञानात्मक एवं सामाजिक विकास उसके सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, भाषा तथा वयस्कों के साथ अंतःक्रिया के माध्यम से होता है — जिसे उन्होंने 'समीपस्थ विकास क्षेत्र' (Zone of Proximal Development) की अवधारणा द्वारा स्पष्ट किया। एरिक एरिक्सन के मनो-सामाजिक सिद्धांत में 6-12 वर्ष की अवस्था को 'उद्यमशीलता बनाम हीनता' के संकट से जोड़ा गया है, जिसमें बालक विद्यालय एवं सामाजिक गतिविधियों में सफलता प्राप्त कर आत्म-विश्वास अर्जित करता है, अन्यथा हीन-भावना का शिकार हो सकता है।

यूरी ब्रोनफेनब्रेनर के पारिस्थितिक प्रणाली सिद्धांत (Ecological Systems Theory) ने बाल विकास के अध्ययन को बहु-स्तरीय परिप्रेक्ष्य प्रदान किया। इस सिद्धांत के अनुसार बालक का विकास सूक्ष्म-तंत्र (परिवार, विद्यालय), मध्य-तंत्र (परिवार-विद्यालय का पारस्परिक सम्बन्ध), बाह्य-तंत्र (माता-पिता का कार्यस्थल, सामुदायिक संसाधन) तथा स्थूल-तंत्र (सांस्कृतिक मूल्य, आर्थिक नीतियाँ) — इन चारों स्तरों की परस्पर क्रिया से निर्धारित होता है। यह सिद्धांत प्रस्तुत अध्ययन के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है, क्योंकि सारण जिले में बाल विकास को समझने हेतु केवल पारिवारिक कारकों तक सीमित न रहकर व्यापक सामाजिक-आर्थिक एवं नीतिगत परिवेश को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

भारतीय संदर्भ में किए गए अनेक अध्ययनों ने यह प्रदर्शित किया है कि निर्धनता, माता-पिता की निम्न शिक्षा, कुपोषण तथा सामाजिक भेदभाव बालकों के संज्ञानात्मक एवं संवेगात्मक विकास को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) एवं राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (NSSO) के आँकड़ों पर आधारित अनेक अध्ययनों ने बिहार राज्य में बाल कुपोषण, विद्यालय-त्याग दर तथा बाल श्रम की उच्च दर को रेखांकित किया है। प्रवासन के बाल विकास पर प्रभाव से संबंधित अध्ययनों में यह पाया गया है कि पिता के दीर्घकालिक प्रवास से बच्चों में पितृ-अभाव (Father Absence) की स्थिति उत्पन्न होती है, जो विशेषकर बालकों में अनुशासनहीनता तथा बालिकाओं में असुरक्षा-बोध को जन्म दे सकती है, यद्यपि माताओं की बढ़ती निर्णायक भूमिका कई बार सकारात्मक प्रभाव भी उत्पन्न करती है। यूनिसेफ तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा प्रकाशित रिपोर्टों में भी यह स्वीकार किया गया है कि विद्यालयी वातावरण, शिक्षक-छात्र

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

संबंध तथा मध्याह्न भोजन जैसी योजनाएँ बालकों के सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

भारतीय मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों द्वारा किए गए अध्ययनों में भी मध्य-बाल्यावस्था को लेकर समानांतर निष्कर्ष प्राप्त होते हैं। इन अध्ययनों में यह बार-बार रेखांकित किया गया है कि भारतीय पारिवारिक संरचना में सामूहिकता (Collectivism), अभिभावकीय अधिकार (Parental Authority) तथा धार्मिक-सांस्कृतिक रीति-रिवाज बालक के सामाजीकरण की प्रक्रिया में पाश्चात्य समाजों की तुलना में भिन्न भूमिका निभाते हैं। उदाहरणार्थ, भारतीय ग्रामीण परिवेश में बालक की पहचान प्रायः व्यक्तिगत उपलब्धि की अपेक्षा पारिवारिक एवं सामुदायिक प्रतिष्ठा से अधिक जुड़ी होती है, जिससे सामाजिक अनुमोदन (Social Approval) बालक के आत्म-सम्मान का एक प्रमुख स्रोत बन जाता है। साथ ही, लैंगिक समाजीकरण की प्रक्रिया भी भारतीय ग्रामीण समाज में प्रारंभिक बाल्यावस्था से ही भिन्न-भिन्न रूप लेने लगती है, जिसके कारण बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक अनुभवों तथा अपेक्षाओं में उल्लेखनीय अंतर देखा जाता है — यह प्रवृत्ति बिहार जैसे पारंपरिक सामाजिक मूल्यों वाले राज्यों में विशेष रूप से प्रबल पाई जाती है।

समग्र साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि बाल विकास एक बहु-आयामी प्रक्रिया है, जिसमें जैविक, पारिवारिक, सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नीतिगत कारक परस्पर गुँथे हुए हैं। तथापि बिहार के ग्रामीण जिलों, विशेषकर सारण जैसे उच्च-प्रवासन जिले के विशिष्ट संदर्भ में इन कारकों के समेकित प्रभाव का विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है, जो प्रस्तुत अध्ययन की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

8. शोध प्रविधि (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध पत्र प्रकृति की दृष्टि से वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक (Descriptive-Analytical) है तथा मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। अध्ययन में भारत की जनगणना (2011), यू-डाइस (U-DISE) जिला प्रोफाइल — सारण (बिहार शिक्षा परियोजना परिषद), राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (NFHS-5, 2019-21, बिहार प्रतिवेदन) तथा प्रकाशित शैक्षणिक एवं नीतिगत साहित्य से प्राप्त आँकड़ों का उपयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त विकासात्मक मनोविज्ञान के स्थापित सैद्धांतिक ढाँचे (पियाजे, एरिक्सन एवं ब्रोनफेनब्रेनर के सिद्धांत) का प्रयोग सारण जिले के सामाजिक-आर्थिक यथार्थ की व्याख्या हेतु विश्लेषणात्मक आधार के रूप में किया गया है।

अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र बिहार राज्य का सारण जिला है तथा लक्ष्य-समूह 6 से 12 वर्ष की आयु वर्ग के बालक-बालिकाएँ हैं। विश्लेषण की इकाई के रूप में परिवार, विद्यालय एवं समुदाय — इन तीनों स्तरों को सम्मिलित किया गया है, ताकि ब्रोनफेनब्रेनर के पारिस्थितिक मॉडल के अनुरूप बहु-स्तरीय प्रभावों को समझा जा सके। आँकड़ों के प्रस्तुतीकरण हेतु सारणी एवं आरेखीय (ग्राफ) विधियों का प्रयोग किया गया है, जबकि गुणात्मक विश्लेषण हेतु विषयवस्तु-विश्लेषण (Thematic Analysis) पद्धति अपनाई गई है। यह उल्लेखनीय है कि वर्तमान शोध पत्र में प्रस्तुत सभी सांख्यिकीय आँकड़े प्रामाणिक द्वितीयक स्रोतों से उद्धृत हैं तथा विश्लेषणात्मक चित्र (जैसे संकल्पनात्मक ढाँचा) शोधकर्ता द्वारा साहित्य-समीक्षा के आधार पर निर्मित किए गए हैं।

अध्ययन की सीमाएँ भी उल्लेखनीय हैं — चूँकि यह अध्ययन प्राथमिक क्षेत्र-सर्वेक्षण पर आधारित नहीं है, अतः यह व्यक्तिगत स्तर के कारण-प्रभाव संबंधों को सांख्यिकीय रूप से सिद्ध करने का दावा नहीं करता, अपितु उपलब्ध प्रामाणिक द्वितीयक आँकड़ों एवं सैद्धांतिक साहित्य के समेकित विश्लेषण के माध्यम से सारण जिले में बाल विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख प्रवृत्तियों एवं कारकों की पहचान करता है। भविष्य में प्राथमिक क्षेत्र-सर्वेक्षण आधारित अध्ययन इस कार्य को और सुदृढ़ कर सकते हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

9. सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

बालक का सामाजिक विकास उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है, जिसके माध्यम से वह सामाजिक नियमों, मूल्यों, भूमिकाओं एवं संबंधों को सीखकर समाज का सक्रिय एवं उत्तरदायी सदस्य बनता है। निम्नलिखित उप-शीर्षकों में सारण जिले के विशेष संदर्भ में इन कारकों का विश्लेषण प्रस्तुत है।

8.1 पारिवारिक संरचना एवं वातावरण

परिवार बालक के सामाजिक विकास की प्रथम एवं सर्वाधिक प्रभावशाली इकाई है। सारण जिले में संयुक्त परिवार-प्रणाली का प्रचलन अभी भी अपेक्षाकृत अधिक है, जो एक ओर बालक को दादा-दादी, चाचा-चाची जैसे विविध पारिवारिक सदस्यों से सामाजिक अंतःक्रिया का अवसर प्रदान करता है, तो दूसरी ओर पुरुषों के बड़े पैमाने पर रोजगार-प्रवासन के कारण अनेक परिवार वास्तव में 'अर्ध-एकल' (Semi-nuclear) संरचना में परिवर्तित हो चुके हैं, जहाँ पिता वर्ष के अधिकांश समय घर से बाहर रहते हैं। ऐसी स्थिति में बालक के सामाजीकरण की जिम्मेदारी मुख्यतः माता एवं वृद्ध परिजनों पर आ जाती है, जिससे अनुशासन, निर्णय-क्षमता तथा पुरुष आदर्श (Male Role Model) की उपलब्धता में अंतर उत्पन्न हो सकता है।

8.2 आर्थिक स्थिति एवं व्यावसायिक पृष्ठभूमि

परिवार की आर्थिक स्थिति बालक के सामाजिक अनुभवों की सीमा निर्धारित करती है — जैसे विद्यालय के बाहर की गतिविधियों, खेल-सामग्री, पुस्तकों तथा सामाजिक आयोजनों में सहभागिता। सारण जिले की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि एवं असंगठित क्षेत्र पर निर्भर है, जहाँ अनेक परिवार सीमांत एवं भूमिहीन कृषक श्रेणी में आते हैं। निम्न आय-स्तर के कारण बच्चों को कई बार घरेलू कार्यों अथवा पारिवारिक आय में सहयोग हेतु कम उम्र में ही जिम्मेदारियाँ सौंप दी जाती हैं, जिससे उनके खेलकूद, सामाजिक अंतःक्रिया एवं अवकाश-गतिविधियों का समय सीमित हो जाता है।

8.3 शिक्षा एवं विद्यालयी वातावरण

विद्यालय बालक के सामाजिक विकास का द्वितीय सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण केंद्र है, जहाँ वह सहपाठियों के साथ सहयोग, प्रतिस्पर्धा, नियम-पालन तथा सामूहिक कार्य जैसे सामाजिक कौशल सीखता है। सारण जिले में प्रारंभिक शिक्षा की पहुँच में विगत वर्षों में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, तथापि विद्यालयों में शिक्षक-छात्र अनुपात की असंगति, भौतिक अवसंरचना की कमी (जैसे पर्याप्त कक्षा-कक्ष, शौचालय, पेयजल) तथा शिक्षकों की अनुपस्थिति जैसी चुनौतियाँ अब भी विद्यमान हैं। इन सीमाओं के कारण बालकों को गुणवत्तापूर्ण सामाजिक-शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराने में बाधा उत्पन्न होती है, जिसका प्रभाव उनके आत्म-विश्वास एवं सामाजिक सहभागिता पर पड़ता है।

8.4 सामाजिक-सांस्कृतिक एवं जातीय संरचना

सारण जिले में जाति-आधारित सामाजिक स्तरीकरण अब भी सामाजिक अंतःक्रिया के स्वरूप को प्रभावित करता है। अनुसूचित जाति एवं जनजाति समुदायों के बच्चे कई बार विद्यालय में सामाजिक-भेदभाव अथवा उपेक्षा का सामना करते हैं, जिससे उनमें सामाजिक असुरक्षा एवं हीन-भावना उत्पन्न हो सकती है। इसके साथ ही, धार्मिक एवं सामुदायिक त्योहार, मेले एवं पारंपरिक आयोजन बालकों के सामाजिक जुड़ाव एवं सामूहिक पहचान के विकास में सकारात्मक भूमिका भी निभाते हैं। अतः सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश बाल विकास पर द्विपक्षीय — सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों — प्रभाव डालता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

8.5 समुदाय, पड़ोस एवं जनसंचार माध्यम

पड़ोस एवं सामुदायिक वातावरण बालक के खेल-साथियों, सुरक्षा-बोध तथा सामाजिक मानदंडों के अवलोकन को प्रभावित करता है। सारण जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक खेल-मैदानों, पुस्तकालयों तथा बाल-केंद्रित मनोरंजन सुविधाओं का अभाव बच्चों की रचनात्मक सामाजिक गतिविधियों को सीमित करता है। दूसरी ओर, विगत दशक में मोबाइल फोन एवं टेलीविज़न की पहुँच में तीव्र वृद्धि हुई है, जिसके कारण बच्चों का एक बड़ा हिस्सा अपना अवकाश-समय डिजिटल माध्यमों पर व्यतीत करने लगा है। यद्यपि इससे सूचना एवं मनोरंजन तक पहुँच बढ़ी है, किंतु अनियंत्रित एवं अनुपयुक्त सामग्री के संपर्क से बच्चों में आक्रामकता, एकाकीपन तथा वास्तविक सामाजिक अंतःक्रिया में कमी जैसी समस्याएँ भी उभर रही हैं।

8.6 सरकारी नीतियाँ एवं योजनाएँ

बाल विकास को प्रोत्साहित करने हेतु संचालित विभिन्न सरकारी योजनाएँ — जैसे एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) के अंतर्गत आंगनवाड़ी केंद्र, मध्याह्न भोजन योजना, सर्व शिक्षा अभियान/समग्र शिक्षा तथा बालिकाओं हेतु संचालित प्रोत्साहन योजनाएँ (जैसे मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना, कन्या उत्थान योजना) — सारण जिले में भी क्रियान्वित हैं। ये योजनाएँ बच्चों विशेषकर बालिकाओं की विद्यालयी उपस्थिति, पोषण-स्तर एवं सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध हुई हैं। तथापि क्रियान्वयन-स्तर पर प्रशासनिक विलंब, संसाधनों की कमी तथा जागरूकता के अभाव के कारण इन योजनाओं का लाभ सभी पात्र बच्चों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाता, जो एक महत्त्वपूर्ण नीतिगत चुनौती है।

8.7 बाल अधिकार एवं संरक्षण-तंत्र

बालक के सामाजिक विकास हेतु उसकी सुरक्षा एवं अधिकारों की संस्थागत गारंटी भी अनिवार्य है। भारत में बाल अधिकार संरक्षण आयोग, एकीकृत बाल संरक्षण योजना (ICPS) तथा चाइल्डलाइन जैसी व्यवस्थाएँ बाल-शोषण, बाल-विवाह एवं बाल-तस्करी जैसी समस्याओं की रोकथाम हेतु कार्यरत हैं। सारण जिले में भी जिला बाल संरक्षण इकाई (DCPU) एवं बाल कल्याण समिति सक्रिय हैं, तथापि दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में इन संस्थाओं की पहुँच एवं जन-जागरूकता अपेक्षाकृत सीमित है। संरक्षण-तंत्र की प्रभावशीलता का सीधा संबंध बालकों में सुरक्षा-बोध तथा समाज के प्रति विश्वास की भावना से है, जो उनके स्वस्थ सामाजिक विकास हेतु आवश्यक है।

10. मनोवैज्ञानिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

मनोवैज्ञानिक विकास से तात्पर्य बालक की संवेगात्मक स्थिरता, आत्म-अवधारणा, आत्म-सम्मान, संज्ञानात्मक क्षमता तथा मानसिक स्वास्थ्य के समग्र विकास से है। निम्नलिखित उप-शीर्षकों में सारण जिले के विशेष सामाजिक-आर्थिक परिवेश में इन पक्षों को प्रभावित करने वाले कारकों का विवेचन प्रस्तुत है।

9.1 पालन-पोषण शैली एवं माता-पिता का व्यवहार

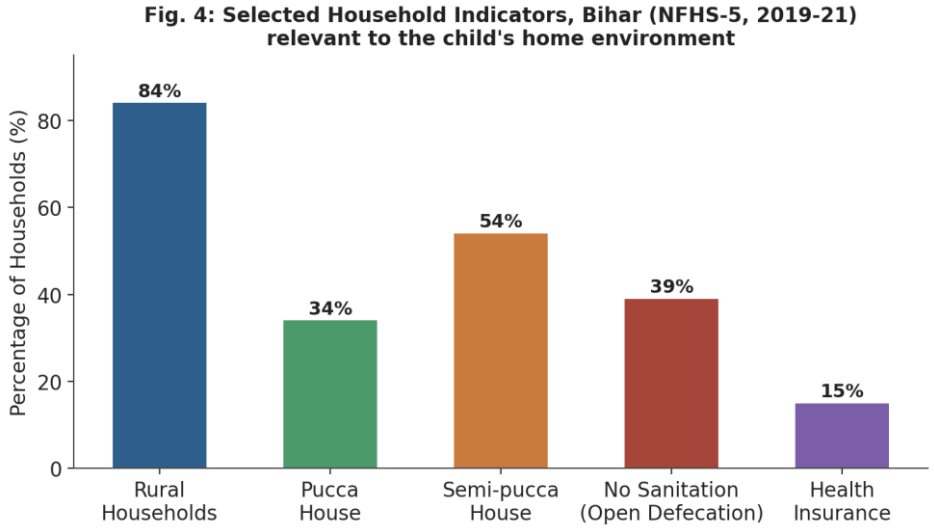
पालन-पोषण शैली — चाहे वह अधिनायकवादी (Authoritarian), जनतांत्रिक (Authoritative) अथवा उदार (Permissive) हो — बालक के आत्म-नियंत्रण, स्वतंत्र निर्णय-क्षमता तथा भावनात्मक सुरक्षा-बोध को गहराई से प्रभावित करती है। सारण जैसे पारंपरिक ग्रामीण परिवेश में प्रायः अनुशासन एवं आज्ञाकारिता पर अधिक बल दिया जाता है, जबकि बालक के विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन अपेक्षाकृत सीमित रहता है। इससे कई बार बालकों में आत्म-विश्वास की कमी, संकोची स्वभाव अथवा दमित संवेगों की प्रवृत्ति विकसित हो सकती है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

साथ ही, पिता के दीर्घकालिक प्रवासन की स्थिति में बालक-पिता संबंध में निरंतरता का अभाव, कुछ बालकों में भावनात्मक रिक्तता एवं असुरक्षा उत्पन्न कर सकता है, यद्यपि नियमित टेलीफोन-संपर्क एवं माता की सशक्त भूमिका इस प्रभाव को काफी हद तक संतुलित भी करती है।

9.2 पोषण एवं स्वास्थ्य

बाल्यावस्था में समुचित पोषण न केवल शारीरिक वृद्धि अपितु मस्तिष्क-विकास एवं संज्ञानात्मक क्षमता के लिए भी अनिवार्य है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (NFHS-5, 2019-21) के अनुसार बिहार राज्य में लगभग 84 प्रतिशत परिवार ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं, जहाँ स्वास्थ्य-सुविधाओं की पहुँच शहरी क्षेत्रों की तुलना में सीमित रहती है। सर्वेक्षण के अनुसार राज्य के लगभग 39 प्रतिशत परिवारों में उचित स्वच्छता-सुविधा (शौचालय) उपलब्ध नहीं है तथा मात्र 15 प्रतिशत परिवारों के पास स्वास्थ्य-बीमा सुविधा है। ऐसी परिस्थितियाँ बच्चों में संक्रामक रोगों, कुपोषण एवं असामयिक रुग्णता की संभावना बढ़ाती हैं, जो अप्रत्यक्ष रूप से उनकी विद्यालयी उपस्थिति, एकाग्रता-क्षमता तथा संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करती हैं। सारण जिला भी बिहार के इन सामान्य प्रतिरूपों से अपवाद नहीं है, अतः यहाँ के बच्चों में भी पोषण-संबंधी चुनौतियाँ मनोवैज्ञानिक विकास की गति को धीमा कर सकती हैं।



चित्र 3: बिहार राज्य के चयनित पारिवारिक संकेतक, जो बालक के घरेलू वातावरण से संबद्ध हैं (स्रोत: NFHS-5, 2019-21)

9.3 भावनात्मक सुरक्षा एवं लगाव (Attachment)

बाल्यावस्था में स्थिर एवं सुरक्षित लगाव (Secure Attachment) बालक के भावनात्मक स्वास्थ्य की आधारशिला है। जिन परिवारों में माता-पिता के मध्य कलह, आर्थिक तनाव अथवा पारिवारिक अस्थिरता विद्यमान रहती है, वहाँ बच्चों में चिंता, भय एवं असुरक्षा-बोध की प्रवृत्ति अधिक देखी जाती है। सारण जिले में निर्धनता-जनित तनाव, प्रवासन के कारण उत्पन्न पारिवारिक दूरी तथा कई बार घरेलू हिंसा जैसी समस्याएँ बालकों के भावनात्मक वातावरण को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकती हैं। इसके विपरीत, जिन परिवारों में संवाद, सहयोग एवं पारस्परिक समर्थन की संस्कृति विद्यमान है, वहाँ बच्चों में भावनात्मक स्थिरता एवं सामाजिक विश्वास अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

9.4 लिंग आधारित भेदभाव

लिंग-आधारित भेदभाव सारण जिले सहित बिहार के अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं के मनोवैज्ञानिक विकास को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है। जिले का निम्न लिंगानुपात (926) तथा महिला साक्षरता एवं पुरुष साक्षरता के मध्य लगभग 23 प्रतिशत अंकों का अंतराल इस असमानता को सांख्यिकीय रूप से प्रमाणित करता है। बालिकाओं को प्रायः घरेलू कार्यों में अधिक सहभागिता, गतिशीलता पर प्रतिबंध तथा शिक्षा के अवसरों में प्राथमिकता-कमी का सामना करना पड़ता है, जिससे उनमें आत्म-सम्मान एवं आत्म-निर्भरता की भावना के विकास में बाधा उत्पन्न हो सकती है। हर्षित है कि कन्या उत्थान योजना एवं साइकिल योजना जैसी सरकारी पहलों से बालिका-शिक्षा में क्रमिक सुधार देखा जा रहा है, किंतु सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है।

9.5 बाल श्रम एवं अल्प आयु में उत्तरदायित्व

निर्धन परिवारों में, विशेषकर जहाँ पिता प्रवासित हैं अथवा परिवार भूमिहीन कृषि-श्रमिक वर्ग से संबद्ध है, बच्चों को कम उम्र में ही घरेलू कार्यों, पशुपालन अथवा छोटे-मोटे आर्थिक कार्यों में सहयोग हेतु नियोजित किया जाता है। इससे बालकों का खेल, अध्ययन एवं सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विकास हेतु आवश्यक अवकाश-समय सीमित हो जाता है। दीर्घकाल में, अत्यधिक उत्तरदायित्व बालकों में समय-पूर्व 'वयस्कीकरण' (Adultification) की प्रवृत्ति उत्पन्न कर सकता है, जिससे उनकी स्वाभाविक बाल्यकालीन गतिविधियों — जैसे खेल, कल्पनाशीलता एवं मुक्त सामाजिक अंतःक्रिया — में कमी आती है।

9.6 विद्यालयी तनाव एवं अधिगम-संबंधी चुनौतियाँ

विद्यालयों में शिक्षकों की कमी, अत्यधिक छात्र-संख्या वाली कक्षाएँ तथा परीक्षा-केंद्रित शिक्षण-पद्धति बालकों में शैक्षणिक तनाव उत्पन्न कर सकती है। जो बच्चे अधिगम में पिछड़ जाते हैं अथवा जिन्हें व्यक्तिगत ध्यान नहीं मिल पाता, उनमें आत्म-सम्मान में कमी तथा विद्यालय के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होने की संभावना रहती है, जो आगे चलकर विद्यालय-त्याग (Dropout) की प्रवृत्ति को भी बढ़ावा दे सकता है। अतः विद्यालयी वातावरण की गुणवत्ता का सीधा संबंध बालकों के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य से स्थापित होता है।

9.7 सामाजिक-भावनात्मक अधिगम एवं लचीलापन (Resilience)

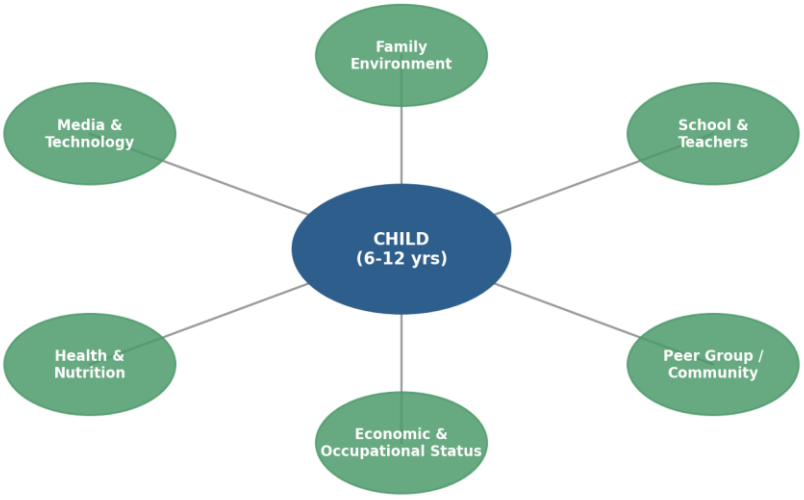
विपरीत परिस्थितियों के बावजूद कुछ बच्चे उल्लेखनीय मनोवैज्ञानिक लचीलापन (Resilience) प्रदर्शित करते हैं, अर्थात् वे प्रतिकूल पारिवारिक अथवा आर्थिक परिस्थितियों में भी सकारात्मक सामाजिक-भावनात्मक विकास बनाए रखने में सफल होते हैं। शोध साहित्य के अनुसार, कम से कम एक स्थिर एवं स्नेहपूर्ण वयस्क-संबंध (चाहे वह माता, शिक्षक अथवा अन्य परिजन हो), सामुदायिक समर्थन तथा बालक की अपनी समस्या-समाधान क्षमता — ये तीनों तत्व लचीलेपन को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होते हैं। सारण जिले के संदर्भ में, जहाँ अनेक बच्चे प्रतिकूल आर्थिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों में बड़े हो रहे हैं, विद्यालयों एवं आंगनवाड़ी केंद्रों में सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (Social-Emotional Learning – SEL) को प्रोत्साहित करने वाली गतिविधियाँ — जैसे समूह-खेल, कहानी-कथन तथा भावना-अभिव्यक्ति के सुरक्षित अवसर — बच्चों के मनोवैज्ञानिक लचीलेपन को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

11. सारण जिले के विशेष संदर्भ में समेकित विश्लेषण

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि सारण जिले में बालक का सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास एक साथ अनेक स्तरों पर कार्यरत कारकों से प्रभावित होता है। ब्रोनफेनब्रेनर के पारिस्थितिक मॉडल के अनुरूप, इन कारकों को परिवार (सूक्ष्म-तंत्र), विद्यालय-समुदाय (मध्य एवं बाह्य-तंत्र) तथा राज्य-नीति एवं सांस्कृतिक मूल्य (स्थूल-तंत्र) — इन तीन परस्पर-सम्बद्ध स्तरों पर व्यवस्थित किया जा सकता है, जैसा कि नीचे दिए गए संकल्पनात्मक चित्र में दर्शाया गया है।

Fig. 3: Conceptual Framework — Factors Influencing Social & Psychological Development of the Child (Age 6-12)



चित्र 4: 6-12 वर्ष के बालक के सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का संकल्पनात्मक ढाँचा (लेखक द्वारा साहित्य-समीक्षा के आधार पर निर्मित)

इस ढाँचे के केंद्र में बालक स्थित है, जिसके चतुर्दिक छह परस्पर-सम्बद्ध प्रभाव-क्षेत्र कार्य करते हैं — पारिवारिक वातावरण, विद्यालय एवं शिक्षक, पड़ोस/सहकर्मी समूह, आर्थिक एवं व्यावसायिक स्थिति, स्वास्थ्य-पोषण, तथा जनसंचार माध्यम। सारण जिले के संदर्भ में इन छहों क्षेत्रों में उल्लेखनीय संरचनात्मक सीमाएँ विद्यमान हैं — निम्न महिला साक्षरता (54.42 प्रतिशत), उच्च पुरुष-प्रवासन दर, सीमित स्वास्थ्य-अवसंरचना (NFHS-5 के अनुसार मात्र 15 प्रतिशत परिवारों में स्वास्थ्य-बीमा) तथा ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन एवं खेल-सुविधाओं का अभाव। इन सीमाओं का संचयी प्रभाव यह है कि जिले के बच्चे — विशेषकर निर्धन परिवारों की बालिकाएँ एवं अनुसूचित जाति/जनजाति समुदाय के बच्चे — अपेक्षाकृत प्रतिकूल सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विकास-वातावरण में बड़े होते हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

सूचक (Indicator)	सारण जिला / बिहार	स्रोत
कुल जनसंख्या (सारण)	39,51,862	जनगणना, 2011
लिंगानुपात (सारण)	926 प्रति 1000 पुरुष	जनगणना, 2011
कुल साक्षरता दर (सारण)	65.96%	जनगणना, 2011
पुरुष / महिला साक्षरता दर (सारण)	77.03% / 54.42%	जनगणना, 2011
6-13 वर्ष बाल जनसंख्या (सारण)	लगभग 8.19 लाख	यू-डाइस, 2015-16
ग्रामीण परिवारों का अनुपात (बिहार)	84%	NFHS-5, 2019-21
स्वच्छता-सुविधा विहीन परिवार (बिहार)	39%	NFHS-5, 2019-21
स्वास्थ्य-बीमा सुविधा प्राप्त परिवार (बिहार)	15%	NFHS-5, 2019-21
शिशु मृत्यु दर (बिहार)	47 प्रति 1000 जीवित जन्म	NFHS-5, 2019-21

सारणी 1: सारण जिला एवं बिहार राज्य के चयनित सामाजिक-जनसांख्यिकीय संकेतक

उक्त सारणी से स्पष्ट है कि निम्न महिला साक्षरता, प्रतिकूल लिंगानुपात तथा सीमित स्वास्थ्य-सुविधाएँ — ये तीनों संकेतक परस्पर गुँथे हुए हैं तथा सामूहिक रूप से बालकों, विशेषकर बालिकाओं के समग्र विकास-अवसरों को सीमित करते हैं। इन निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सारण जिले में बाल विकास हेतु किए जाने वाले किसी भी हस्तक्षेप (Intervention) को केवल विद्यालयी शिक्षा तक सीमित न रखकर, पारिवारिक सशक्तीकरण, स्वास्थ्य-सुविधाओं के विस्तार तथा सामुदायिक जागरूकता को भी समान रूप से सम्मिलित करना होगा।

12. प्रमुख चुनौतियाँ

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर सारण जिले में बाल विकास के मार्ग की प्रमुख चुनौतियों को निम्नानुसार संक्षेपित किया जा सकता है —

- उच्च पुरुष-प्रवासन दर के कारण अनेक परिवारों में पितृ-उपस्थिति का अभाव तथा बाल-पालन का संपूर्ण भार माताओं/वृद्ध परिजनों पर।
- महिला साक्षरता दर एवं लिंगानुपात में व्याप्त असमानता, जो बालिकाओं के विकास-अवसरों को सीमित करती है।
- विद्यालयों में शिक्षक-छात्र अनुपात की असंगति तथा भौतिक अवसंरचना की कमी।
- स्वास्थ्य-सुविधाओं, स्वच्छता एवं पोषण-सेवाओं की सीमित पहुँच, विशेषकर दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में।
- निर्धनता-जनित बाल श्रम एवं अल्प आयु में पारिवारिक उत्तरदायित्व, जो बच्चों के खेल एवं अध्ययन के समय को सीमित करता है।
- सार्वजनिक खेल-मैदानों, पुस्तकालयों तथा बाल-केंद्रित मनोरंजन सुविधाओं का अभाव।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

- जनसंचार माध्यमों (मोबाइल/इंटरनेट) के अनियंत्रित एवं अनुपयुक्त उपयोग से उत्पन्न मनोवैज्ञानिक जोखिम।
- सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में प्रशासनिक विलंब तथा जागरूकता की कमी।

13. सुझाव एवं अनुशंसाएँ

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर सारण जिले में बच्चों के सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विकास को सुदृढ़ करने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं —

1. विद्यालयों में परामर्श-सेवाओं (School Counselling) की व्यवस्था की जाए, ताकि बालकों के भावनात्मक एवं व्यावहारिक समस्याओं की समय पर पहचान एवं सहायता संभव हो सके।

2. बालिका-शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु सामुदायिक जागरूकता अभियान तथा मौजूदा योजनाओं (कन्या उत्थान, साइकिल योजना आदि) के क्रियान्वयन में तेजी लाई जाए।

3. प्रवासी श्रमिक परिवारों के बच्चों हेतु विशेष सहायता-तंत्र विकसित किया जाए, जैसे नियमित शिक्षक-अभिभावक संवाद, सामुदायिक मार्गदर्शन-केंद्र तथा हेल्पलाइन सेवाएँ।

4. आंगनवाड़ी केंद्रों एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को सुदृढ़ कर पोषण एवं नियमित स्वास्थ्य-जाँच सेवाओं की पहुँच का विस्तार किया जाए।

5. ग्राम एवं पंचायत स्तर पर सुरक्षित खेल-मैदान, बाल-पुस्तकालय तथा सामुदायिक गतिविधि-केंद्र विकसित किए जाएँ।

6. अभिभावकों हेतु सकारात्मक एवं जनतांत्रिक पालन-पोषण शैली (Positive Parenting) से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।

7. बाल श्रम की रोकथाम हेतु स्थानीय प्रशासन, विद्यालय एवं सामाजिक संगठनों के मध्य समन्वित निगरानी-तंत्र स्थापित किया जाए।

8. डिजिटल माध्यमों के सुरक्षित एवं संतुलित उपयोग हेतु विद्यालय स्तर पर 'डिजिटल साक्षरता' कार्यक्रम प्रारंभ किए जाएँ।

9. भविष्य में सारण जिले में प्राथमिक क्षेत्र-सर्वेक्षण आधारित विस्तृत शोध करवाया जाए, ताकि नीति-निर्माण हेतु अधिक सटीक साक्ष्य उपलब्ध हो सकें।

14. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि 6-12 वर्ष की आयु के बच्चों का सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास एक बहु-कारकीय एवं बहु-स्तरीय प्रक्रिया है, जिसमें पारिवारिक, आर्थिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य-संबंधी तथा सांस्कृतिक कारक परस्पर सम्बद्ध होकर कार्य करते हैं। बिहार राज्य के सारण जिले के विशेष संदर्भ में यह अध्ययन दर्शाता है कि निम्न महिला साक्षरता, प्रतिकूल लिंगानुपात, उच्च पुरुष-प्रवासन दर तथा सीमित स्वास्थ्य एवं मनोरंजन सुविधाएँ — ये सभी कारक सम्मिलित रूप से बच्चों, विशेषकर बालिकाओं एवं वंचित सामाजिक समूहों के समग्र विकास में बाधक सिद्ध हो रहे हैं। तथापि, सरकारी योजनाओं, विद्यालयी सुधारों तथा सामुदायिक जागरूकता में हो रही क्रमिक प्रगति इस दिशा में आशाजनक संकेत भी प्रस्तुत करती है। यदि परिवार, विद्यालय, समुदाय एवं

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

राज्य-तंत्र — इन चारों स्तरों पर समन्वित एवं सुनियोजित प्रयास किए जाएँ, तो सारण जिले के बच्चों के सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विकास की गुणवत्ता में सार्थक सुधार संभव है।

संक्षेप में, प्रस्तुत शोध पत्र यह प्रतिपादित करता है कि बाल विकास केवल व्यक्तिगत परिवार की जिम्मेदारी न होकर एक सामूहिक सामाजिक दायित्व है। बालक का स्वस्थ सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विकास तभी सुनिश्चित हो सकता है, जब पारिवारिक स्नेह एवं मार्गदर्शन, गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी शिक्षा, समुचित पोषण एवं स्वास्थ्य-सेवाएँ, सुरक्षित सामुदायिक वातावरण तथा संवेदनशील नीतिगत समर्थन — ये सभी तत्व एक साथ, निरंतर एवं समन्वित रूप से बालक के चतुर्दिक उपलब्ध हों। सारण जिले जैसे ग्रामीण एवं प्रवासन-प्रधान क्षेत्रों में यह लक्ष्य प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण अवश्य है, किंतु सुनियोजित, सतत एवं सहभागितापूर्ण प्रयासों से यह सर्वथा संभव भी है। आने वाले वर्षों में प्राथमिक क्षेत्र-सर्वेक्षणों पर आधारित गहन शोध इस दिशा में साक्ष्य-आधारित नीति-निर्माण को और अधिक सशक्त बना सकते हैं।

संदर्भ सूची (References)

1. भारत की जनगणना (Census of India), 2011. जिला जनगणना हस्तपुस्तिका — सारण, बिहार। भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त कार्यालय, भारत सरकार।

2. बिहार शिक्षा परियोजना परिषद (BEPC), 2015-16. जिला प्रोफाइल : सारण। यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इन्फॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन (U-DISE), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार।

3. इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज (IIPS) एवं ICF, 2021. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5), 2019-21 : बिहार राज्य प्रतिवेदन। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, मुंबई।

4. Bronfenbrenner, U. (1979). The Ecology of Human Development: Experiments by Nature and Design. Harvard University Press, Cambridge, MA.

5. Erikson, E. H. (1963). Childhood and Society (2nd ed.). W. W. Norton & Company, New York.

6. Piaget, J. (1952). The Origins of Intelligence in Children. International Universities Press, New York.

7. Vygotsky, L. S. (1978). Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes. Harvard University Press, Cambridge, MA.

8. यूनिसेफ (UNICEF), भारत। बाल अधिकार एवं विकास से संबंधित प्रतिवेदन एवं नीति-दस्तावेज। यूनिसेफ इंडिया कंट्री ऑफिस, नई दिल्ली।

9. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं बाल मनोविज्ञान से संबंधित प्रशिक्षण सामग्री एवं पाठ्यचर्या रूपरेखा। NCERT, नई दिल्ली।

10. महिला एवं बाल विकास विभाग, बिहार सरकार। एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) योजना एवं कन्या उत्थान योजना से संबंधित सरकारी प्रतिवेदन एवं परिपत्र।

11. शिक्षा विभाग, बिहार सरकार। समग्र शिक्षा अभियान एवं मध्याह्न भोजन योजना से संबंधित वार्षिक प्रतिवेदन।

12. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR) द्वारा प्रायोजित ग्रामीण बिहार में बाल विकास एवं प्रवासन से संबंधित शोध-पत्र एवं कार्यपत्र।